होगा।

गए। धन सिंह के मुताबिक उक्त लोगों

एक भवन बना 26 अनाथ बच्चों की शरणगाह

त्रिलोचन भट्ट
फरीदाबाद, 25 दिसंबर।

अमित की उम्र 11 साल है। करीब छह साल पहले वह अपने मां-बाप और बड़े भाई के साथ रहता था। एक रात उसने देखा कि नशे में धुत उसके बाप ने पहले उसकी मां को पलंग से बांधा और फिर उसे आग लगाकर भाग गया।

मां धूं-धूंकर जलती रहीं और दोनों भाई चीखते-चिल्लाते रहे। कुछ देर बात पड़ोसी तो आए, लेकिन तब तक उनकी मां पूरी तरह जल चुकी थी। दोनों भाई कुछ दिन तक उसी घर में अपने बाप का इंतजार करते रहे, लेकिन बाप लौटकर नहीं आया। भूख के मारे दोनों भाई दिल्ली के मंदिरों में भीख मांगने लगे। यह सिलसिला करीब चार साल तक चला, लेकिन एक दिन अचानक अमित का भाई कहीं चला गया और अमित सड़कों पर अकेला अनाथ रह गया। कुछ समय बाद उस पर उस पर आश्रय भवन चलाने वाले चांडी वर्गीज की बेटी शीबा वर्गीज की नजर पड़ी और वह अमित को बड़ौली गांव स्थित आश्रय भवन में ले आई। अमित अब बड़ौली के एक प्राईवेट स्कूल में पढ़ रहा है और वह बड़ा होकर कोई अच्छी नौकरी करना चाहता है। आश्रय भवन में अमित जैसे 25 बच्चे और हैं, जिन्हें चांडी वर्गीज और उनका परिवार अच्छे नागरिक बनाने के प्रयास में जुटा हुआ है।

केन्द्र सरकार की नौकरी से रिटायर होने के बाद श्री वर्गीज ने सबसे पहले

संडे स्पेशल

दिल्ली में अफगानिस्तानी शरणार्थियों के लिए काम किया। वर्गीज बताते हैं कि नौकरी के दौरान छह साल तक अफगानिस्तान में रहने के कारण वे और उनका परिवार वहां की भाषा बोलने लगे थे। पर आतंकवाद के कारण करीब एक लाख लोगों के साथ भागकर दिल्ली आ गए। उन लोगों के साथ सबसे बड़ी समस्या भाषा की थी।

वर्गीज और उनके परिवार ने शरणार्थियों के लिए अंग्रेजी भाषा सिखाने का स्कूल खोला, साथ ही उनकी अन्य जरूरतों को भी पूरा करने का प्रयास किया। इसी दौरान श्री वर्गीज की बेटी शीबा भी समाज सेवा के काम से जुड़ गई। उसने पहले एक एनजीओ के साथ मिलकर स्लम बस्तियों में बच्चों का पढ़ाना शुरू किया और बाद भी खुद एक एनजीओ शुरू करे उन बच्चों को पढ़ाने लगी, जो सड़कों पर फालतू घूमते थे। शीबा बताती हैं जल्दी ही उन्हें महसूस होने लगा कि जिन बच्चों को वे पढ़ा रही हैं वे स्लम के माहौल में उनकी इच्छा के अनुरूप नहीं बन पा रहे हैं। कुछ लोगों ने उन्हें ऐसे बच्चों को अपने साथ रखने की सलाह दी, लेकिन किराए के घर में ऐसा संभव नहीं था।

बड़ौली के आश्रय भवन में रह रहे हैं ये अनाथ बच्चे। *भास्कर*

इसके बाद उनके पिता ने जमीन की तलाश शुरू की। पर कुछ परेशानी के बाद यहां काफी कम कीमत में उन्हें अच्छी जमीन मिल गई और पैसे की काफी किल्लत के बावजूद 1995 में आश्रय भवन शुरू कर दिया गया।

चांडी वर्गीज बताते हैं कि उन्हें और भी कई ऐसे बच्चे मिले हैं जिन्हें वास्तव में आश्रय की जरूरत है, लेकिन फिलहाल उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि एक भी और बच्चे को आश्रय दिया जा सके। वे कहते हैं कि हर महीने करीब 70 हजार रुपए बच्चों पर खर्च हो जाते हैं, लेकिन पैसा आने का कोई नियमित स्रोत नहीं है। वर्गीज कहते हैं कि यदि सरकार की तरफ से उन्हें कोई मदद मिले तो वे और बच्चों को आश्रय दे सकते हैं।